५

रेशमी टाई

[सितम्बर १९३८]

पात्र-परिचय

१ *नवीनचन्द्र राय—इंश्योरेंस कंपनी का एजेण्ट और साम्यवाद का विश्वासी। आयु ३० वर्ष*

२ *लीला—उसकी सुशीला स्त्री। आयु २२ वर्ष*

३ *सुधालता—स्वयं सेविका। आयु १८ वर्ष*

४ *चन्दन—नवीनचन्द्र का नौकर। आयु ४५ वर्ष*

इस नाटक का सर्वप्रथम अभिनय लक्ष्मी भवन नरसिंहपुर में १५ सितम्बर को श्री रामसनेही वर्मा बी० ए० एल-एल० बी० के निर्देशन में हुआ। भूमिका इस प्रकार थी :

नवीन चन्द्र राय—	श्री रामानुज प्रसाद वर्मा
लीला—	श्री शिवनाथ शुक्ल
चन्दन—	श्री चन्द्र प्रकाश वर्मा बी० ए०
सुधालता—	श्री प्रेमशङ्कर

दृश्य—नम्बर २० स्टेनली स्ट्रीट।

समय—सन् १९३८ का खादी-सप्ताह। प्रातःकाल।

एक सुसज्जित कमरा। ड्राइंग और ड्रेसिंग रूम जैसे मिल गए हों। एक ओर कार्ल मार्क्स और दूसरी ओर ग्रेटा गार्बो के विशाल चित्र। बग़ल में एक बड़ा शीशा। कमरे के एक कोने मे एक टेबुल है, जिस पर कुछ पुस्तकें और काग़ज़ रखे हुए हैं। दूसरी ओर एक आल्मारी है, जिसमे नीचे दो दराज़ हैं। बीचों-बीच एक टेबुल है, जिस पर फूलदान है और उसमें गुलदस्ता लगा हुआ है। आमने-सामने दो कुर्सियाँ पड़ी हैं। ज़मीन पर एक मख़मली फर्श बिछा हुआ है। दीवाल पर एक घडी, जिसमें ८ बजकर १० मिनट हो गए हैं। बग़ल मे कैलेंडर।

नवीनचन्द्र नेपथ्य की ओर बग़ल में दरवाज़े तक बढ़ कर बडे ध्यान से देख रहा है।

नवीन—[दरवाज़े की ओर धीरे-धीरे बढ़कर देखता हुआ] इतनी ठंड मे स्नान···! पूजा···! [एकटक देखते हुए रुककर] फ्रेथफुल वाइफ···स्वीट लीला! [फिर रुककर लौटते हुए अपनी ओर देखकर] और मैं? [बीच में रखी हुई टेबुल के समीप आता है। दराज़ खोल कर एक बंडल निकालता है। उसे हाथों से तौलता है, फिर छोटे दराजों से कैंची निकाल कर बंडल की रस्सी काटकर उसे खोलता है।

दो रेशमी टाई निकालता है। एक टाई को उलट-पलट कर ग़ौर से देखता है। हाथ में लेकर झुलाकर, कुछ ऊपर उठाकर देखते हुए] व्यूटीफ़ुल ! [दूसरे हाथ में लेकर] एस्प्लेनडिड ! [चित्र की ओर देखकर] लाइक दैट अव् ग्रेटा गार्बो ! शैल आइ ट्राइ ? [शीशे के समीप जाकर ओंठ से सीटी बजाता हुआ टाई पहनता है। हेराल्ड वाइल्ड का 'आई हीयर यू कालिंग मी' गाना गुनगुनाते हुए टाई की नाट् बाँधता है। रुककर खिड़की के पास जाते हुए] अरे चन्दन, ओ चन्दन ! [खिड़की से दाहिनी ओर झाँकते हुए] अरे, आज चा-वा लाना है या नहीं ?

च०—[[नेपथ्य से] लाया हुज़ूर।

न०—[टाई की नाट् ठीक करते हुए] इन कम्बख़्तों का सूरज नौ बजे निकलता है। अभी तक चा तैयार नहीं हुई। रास्कल्स, ईडियट्स !

[चन्दन का चा लेकर प्रवेश]

न०—[टाई पर हाथ फेरते हुए] क्यों रे, जब तक मैं चा न मँगाऊँ, तब तक आराम से बैठा रहता है। हाथ पर हाथ धरे ?

च०—[बीच वाली टेबुल पर ट्रे रखते हुए] हुज़ूर, टोस्ट में मक्खन लगा रहा था।

न०—और मैं तेरे सिर पर चपत लगाऊँ तो ? ईडियट, [घड़ी की ओर देखते हुए] आठ बज गए, जानता है ?

च०—हुज़ूर, आज दिन मालूम नहीं पड़ा। ख़ूब कुहरा पड़ रहा था हुज़ूर।

न०—तेरी अक्ल पर ? बदमाश, चा किस लेबिल की डाली ? पीले की या लाल की ?

च०—हुजूर, लाल की।

न०—हूँ, [शान्त होकर] उनकी पूजा ख़तम हो गई ?

ली०—[आते हुए] हो गई, आ रही हूँ। सुबह से यह कैसा ग़ुस्सा ?

न०—[कुर्सी पर बैठते हुए] ग़ुस्सा न आवे ? आठ बज जाते हैं, और चा नहीं आती ! [झल्लाकर सिगरेट जलाता है।]

ली०—[सन्तोष देते हुए] सचमुच नाराज़ी की बात है ! मैं कल से और भी सुबह उठूँगी।

न०—तुम क्यों उठोगी ? ये नौकर किसलिए हैं ?

ली०—[मुस्कुराते हुए कुर्सी पर बैठ कर] ग़ुस्सा दिलाने के लिए। इस ठंड में गर्मी लाने के लिए !

न०—[कुछ मुस्कुरा कर, चन्दन की ओर देखते हुये] ईडियट्। जाओ, बाहर बैठो। [चन्दन चला जाता है।]

ली०—[शान्ति से] इतने नाराज़ होकर बाहर जाओगे तो फिर केस कैसे मिलेंगे ? इसी महीने के आख़ीर तक तो आपको २५ हज़ार इश्योर करने हैं। आज तारीख़ १८ हो चुकी। [कैलेंडर पर दृष्टि।]

न०—[झल्ला कर] ऐसी हालत में कर चुका। [चा की केटली उठाता है।]

ली०—नहीं लाओ, मैं चा बनाऊँ। [केटली ले लेती है।] तुम तो पच्चीस क्या, पचास हज़ार कर लोगे। [प्याले में चा डालते हुए] अब लोग इंश्योरेन्स की ज़रूरत समझने लगे हैं। १०-१५ बरस पहले तो लोग समझते थे कि इंश्योरेन्स अपशकुन है। मरने की बात अभी से सोचते हैं। [चा का रङ्ग देखते हुए] देखो, कितना अच्छा कलर है!

न०—[प्याले को देखकर] हूँ।

ली०—सचमुच इस ठंड में चा एक चीज़ है। कंपनी वालों को ठंड मे चा की क़ीमत बढा देनी चाहिये। क्यों?

न०—कहीं अपनी यह राय किसी कंपनी को भेज भी न देना।

ली०—तो मुफ़्त में तो भेजूँगी नहीं! चीनी?

न०—डेढ़ चम्मच।

ली०—[डेढ़ चम्मच चीनी डालकर दूध मिलाने से पहले] देखो, चा का रङ्ग! तुम्हारी रेशमी टाई से मिलता-जुलता। [रुककर प्रश्न के स्वर में] क्या बाहर जाने को तैयार हो गए? [दूध डालती है।]

न०—नहीं तो।

ली०—यह सुबह से टाई पहन रखी है!

न०—[चा को ओंठो से लगाते हुए] यों ही देखना चाहता था, कैसी लगती है। नयी है—कल ही लाया हूँ!

ली०—[चा पीते हुए प्रशंसा के स्वरों में] अच्छी लगती है!

न०—[उमङ्ग से] अच्छी? बहुत अच्छी। ग्रेटा गार्बो जैसी-देखो·····[चित्र की ओर संकेत करता है।]

ली०—[ग्रेटा के चित्र की ओर देखकर] सचमुच इस समय आप ग्रेटा जैसे ही मालूम हो रहे हैं।

न०—[झेंपकर] हिश्, और सुनो। मुफ़्त—बिल्कुल मुफ़्त !

ली०—कैसे ? क्या सिगरेट के कूपन-प्रेज़ेण्ट में ?

न०—[सिर हिलाकर] ऊँ—हूँ !

ली०—फिर किसी ने प्रेजेण्ट की होगी ?

न०—[चा का घूँट लेकर] ऊँ—हूँ !

ली०—अच्छा, मैं समझ गई। [रुककर] दद्रुगजकेसरी का उपहार !

न०—[हँसकर] पागल !

ली०—फिर क्लीयरेंस सेल में !

न०—फेल।

ली०—[हँसकर] अच्छा, इस बार ठीक बतलाऊँ। एक रुपये मे १४४ चीज़ों के साथ डमी वाच और टाई !

न०—[मुस्कराकर] नानसेन्स, [सिगरेट का धुँआ छोड़ता है।]

ली०—फिर मैं नहीं समझी।

न०—लो समझो। मैं कल गया था मदनलाल खन्ना के यहाँ। बहुत सी 'वेराइटीज' देखीं। दो टाईज़ पसन्द की। ली एक ही। लेकिन उसने दोनों टाईज़ बण्डल मे बाँध दीं और दाम एक ही के लिए।

ली०—[चा का घूँट लेते हुए] तो यह टाई तुम्हें लौटा देनी चाहिए।

न०—क्यों लौटा देनी चाहिए ? आई हुई लक्ष्मी को ठुकरा देना चाहिए ! जो चीज़ आप से आप आ जाय—आ जाय।

ली०—यह चोरी नहीं है ?

न०—चोरी क्यों ? मैं उसके सामने लाया हूँ। उसने अपने हाथ से बंडल बनाया।

ली०—पर दाम तो आपने एक ही के दिए।

न०—उसने भी दाम एक ही के लिए ?

ली०—नहीं, यह ठीक नहीं। इस तरह की भूल तो अक्सर हो ही जाती है।

न०—तो जो भूल करे, 'सफर' करे। [दूसरी सिगरेट जलाता है।]

ली०—और अगर मदनलाल कहला भेजे कि एक टाई आपके साथ ज़्यादा चली गई है, तो ?

न०—[स्वतन्त्रता से] तो मै कहला दूँगा कि मैं क्या जानूँ ? अपनी दूकान में देखो। कहीं किसी कपड़े में लिपटी पड़ी होगी।

ली०—[रुष्ट होकर] यह बात आपके स्वभाव से अब तक नही गई। जब आप पढ़ते थे, तब भी किताबों के ख़रीदने में आप ऐसी ही हाथ की सफाई दिखलाते थे।

न०—[सिगरेट का धुँआ छोड़कर] और वे लोग हमे कितना लूटते हैं ! यह भी तो सोचो—

लीला—रोज़गार करते हैं ! न कमायें तो खायें क्या ?

न०—[व्यङ्ग से] न कमाये तो खायें क्या ? हमसे एक के चार वसूल करते हैं ! ऐसे हैं ये कमाने वाले कमीने पूंजीपति । इन पूँजीपतियों की यही सज़ा है । जानती हो, कार्ल मार्क्स ने क्या लिखा है ? फ़िलासोफर्स हिदरटू हैव ओनली इण्टरप्रेटेड दि वर्ल्ड इन वेरियस वेज़, दि टास्क इज़ टु चेञ्ज इट् । इस संसार को बदलना है ।

ली०—यह सिद्धान्त आपने ख़ूब निकाला !

न०—मेरा सिद्धान्त क्यों, यह तो सोशलिज्म है । डायलेक्टिकल मैटीरियलिज़्म ।

ली०—अपने दुर्गुणों को सोशलिज्म न बनाइए । नहीं तो देश का एक दम ही उद्धार हो जायगा ।

न०—ख़ैर, यह टाई तो इस समय मिस्टर नवीनचन्द्र राय एम० ए० के कंठ की शोभा बढा रही है...और चा दूँ ? तुमने चा बहुत थोड़ी पी ।

ली०—धन्यवाद ! मैं पी चुकी ।

न०—[पुकारकर] चन्दन, यह ले जाओ ।

च०—[नेपथ्य से] आया हुज़ूर ।

ली०—यह टाई चाहे जितनी अच्छी हो, लेकिन [चन्दन का प्रवेश] आज काफी ठंड है । कुहरा बहुत छाया था । ऐसा मालूम होता था कि आज सूरज निकलेगा ही नहीं । क्यों चन्दन ?

च०—[प्रसन्न होकर] जी हाँ, हुज़ूर, खूब कुहरा पड़ रहा था ।

ली०—[उठकर] अच्छा, तो मैं ज़रा गरम कपड़े पहन लूँ ।

[प्रस्थान ।]

च०--[ट्रे ले जाते हुए] हुजूर, अभी-अभी एक लड़की आई है। कुछ कपड़े लिये हुए है।

न०—[भौंहें सिकोड़ कर] लड़की है ?

च०—हाँ, हुजूर, लड़की है। बेचना चाहती है हुजूर। अगर हुकुम हो तो—

न०--[सोचते हुए] अभी नहीं। मैं ज़रा विक्टोरिया पार्क जाऊँगा। पाँच मिनट के लिए। [सोचकर] ऐ...? अच्छा भेज दे।

[चन्दन का प्रस्थान। नवीन टाई के झूलते हुए छोर को हाथ में लेकर बार-बार झुलाकर देख रहा है। सुधालता का प्रवेश। खद्दर की वेष-भूषा। उसके हाथों में खद्दर का एक गट्ठर है। आते ही गट्ठर को ज़मीन पर रखकर दोनों हाथ जोडते हुए—]

वन्देमातरम्

न०—[सिर हिला कर] नमस्ते। कहिए ?

सु०—मेरा नाम सुधालता है। मैं स्वयसेविका हूँ। खद्दर बेचना चाहती हूँ।

न०—[दुहराकर] खद्दर ?

सु०—जी हाँ। कल से खद्दर-सप्ताह प्रारंभ हो गया है। कुछ खद्दर न ख़रीदियेगा ?

न०—खद्दर ? नहीं, इस समय तो नहीं, मेरे पास काफी कपड़े हैं। फिर खद्दर में कोई क्वालिटी भी तो नहीं है। नो डिज़ाइन। और आज पहनो—कल मैला।

सु०—[अनुरोध के स्वर में] आप लोगों को तो पहनना चाहिए। हाथ का कता और हाथ ही का बुना पहनने में कितना सन्तोष···।

न०—इस सायन्स की 'एज' मे गाधी जी का चरखा। [मुस्कुरा कर] ठीक है, एरोप्लेन के रहते हुए बैल गाड़ी से जल्दी पहुँचने की बात ··।

सु०—यह तो स्वावलम्बन की शिक्षा का एक साधन-मात्र है। उस रोज़ आपने भी तो जवाहर पार्क में एक लेक्चर दिया था···!

न०—मैंने तो सोशलिज़्म के सिद्धान्त बताए थे।

सु०—जी हाँ, पर लेक्चर बड़ा जोशीला था।

न०—[प्रसन्न होकर] अच्छा, आपने सुना था ?

सु०—जी हाँ, मैं तो वहीं पास खड़ी थी। पिन ड्राप साइलेंस थी। जब आपका लेक्चर ख़त्म हुआ, तो लोग कह रहे थे कि अगर ऐसा लेक्चर सुनने के लिए मिले, तो हम लोग रोज़ यहाँ इकट्ठे हो सकते हैं।

न०—[प्रसन्नता से] अच्छा ?

सु०—कुछ लोग तो आपके लेक्चर की बहुत सी बातें लिखते भी जा रहे थे।

न०—अच्छा, मैंने यह नहीं देखा !

सु०—आप तो लेक्चर दे रहे थे। अच्छी भीड़ थी। ऐसा लेक्चर बहुत दिनों से नहीं सुना था।

न०—[नम्रता बतलाते हुए] मैं तो किसी तरह अपने विचार प्रकट कर लेता हूँ। बस, यही मुझे आता है। अच्छा, ख़ैर आपके पास कैसे डिज़ाइन्स हैं ?

सु०—[प्रसन्न होकर] देखिये। बहुत तरह के हैं। [गट्ठर खोलती है। एक थान दिखलाते हुए] यह गांधी आश्रम अहमदाबाद का है। चैक। दस आने गज़। बहुत अच्छा। जितना धुलेगा, उतना ही साफ आवेगा।

न०—[हाथ में लेते हुए] अच्छा है। कुछ खुरदरा है। यों तो.....

सु०—[दूसरा थान लेकर] यह मेरठ का है। इससे अच्छा सूत तो इस डिज़ाइन का कहीं मिलेगा ही नहीं। सिर्फ एक रुपया गज़ है।

न०—[हाथ में लेकर देखता है।] हूँ।

सु०—और यह देखिए पीलीभीत का। आपके लायक़। सवा रुपया गज़। इसमें आपका सूट बहुत अच्छा बनेगा। आप के सूट में तो सिर्फ सात गज़ ही लगेगा ?

न०—हाँ, नहीं तो क्या ? यही सात गज़।

सु०—तो फिर इसे ख़रीद लीजिये। दूँ सात गज़ ?

न०—है तो अच्छा ! सबसे अच्छा यही है। लेकिन...और इससे अच्छा डिज़ाइन नहीं ?

सु०—इससे अच्छा डिज़ाइन दो-तीन दिन में आ जायगा।

न०—तो फिर तभी न लाइए ?

सु०--उस वक्त भी लाऊँगी। अभी भी ले लीजिए। क्या इनमें कोई भी ठीक नहीं है ?

न०--हाँ, ठीक तो है, पर.. कुछ ठीक नहीं है।

सु०—यों पहनने की इच्छा हो तो ठीक है, नही तो कुछ भी ठीक नहीं।

न०--फिर कभी आइये।

सु०—तो क्या मैं निराश होकर जाऊँ ? इधर आपका इश्योरेन्स विज़नेस भी तो चल निकला है। अब तो काफी रुपया आता होगा।

न०—बात यह है कि इस समय मेरे पास कुछ नहीं है। बिज़नेस चल भले ही निकले, लेकिन मुसीबत यह है कि कई दोस्तों की लाइफ इंश्योर करने से उनकी प्रीमियम मुझे अपने पास से देनी पड़ जाती है। उनके पास जब रुपये होंगे तब कहीं वे मुझे देंगे। इसी महीने मे क़रीब ३००) रु० अपने पास से देने पड़े।

सु०--ठीक है, लेकिन खादी-सप्ताह मे आपको कुछ लेना ही चाहिए। देखिए, शहर में मैंने दो दिनों में ७५ रु० की खादी बेच डाली।

न०—खैर, अभी तो पाँच दिन बाक़ी हैं। फिर आइए। उस समय तक आपके पास नये डिज़ाइन्स भी आ जावेंगे।

सु०—तो फिर मैं ऐसे ही वापस.....?

न०—फिर आइये। मुझे इस समय ज़रा विक्टोरिया पार्क जाना है।

सु०—अच्छी बात है। जल्दी में कपड़ा ख़रीदना भी नहीं चाहिए। मैं फिर दो-तीन दिन बाद आऊँगी।

न०—हाँ [अनिश्चित रूप से] फिर देखूँगा।

सु०—[गट्ठर बाँधते हुए] अच्छा फिर आऊँगी। जब आपको ये पसन्द नहीं, तो फिर इन्हें मैं आपको देना भी पसन्द नहीं करूँगी। अच्छा, [हाथ जोड़कर] वन्दे।

[नवीन सिर हिलाकर हाथ जोड़ते है। उसकी ओर ग़ौर से देखते हैं। सुधा जाती है, पर फिर बाहर से लौटकर—]

मैं एक विनय करना चाहती थी।···मैं···

न०—हाँ, कहिये।

सु०—मै १४ न० स्टेनली स्ट्रीट में कपड़ा बेंचकर वहीं अपना गज़ भूल आई। आपका मकान तो शायद नं० २० है?

न०—हाँ।

सु०—तो आपको कोई आपत्ति तो न होगी, अगर मैं अपना गट्ठर यहीं छोड़ जाऊँ? ५-१० मिनट में ले जाऊँगी। वहाँ से अपना गज़ ले आऊँ। रास्ते में यह गट्ठर व्यर्थ क्यों ढोऊँ? और फिर मुझे आगे ही जाना है।

न०—[स्वीकृति से सिर हिला कर] नहीं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। आप रख जाइये। अगर मैं आपके आने तक भी आ सकूँ, तो मेरा नौकर चन्दन आपको यह गट्ठर दे देगा। मैं नौकर से कह दूँ [पुकार कर] अरे ओ चन्दन!

च०—[आकर] जी हुजूर—

न०—देखो, अगर मैं यहाँ न रहूँ तो यह गट्ठर इन्हें दे देना। इनका नाम श्रीमती सुधालता है। समझे ?

च०—बहुत अच्छा, हुजूर।

न०—[सुधा से] ठीक ?

सु०—धन्यवाद। [प्रस्थान।]

[नवीन सिगरेट जलाता है। उसकी नज़र लीडर पर पड़ती है।] अच्छा ? आज का पेपर पढ़ ही नहीं पाया ! देखूँ ! [लीडर देखता है, एक मिनट तक पन्ने लौटने पर] कोई ख़ास बात नहीं। [लीडर के पृष्ठ पर विज्ञापन देखकर] अच्छा ? टूटल टाईज़—प्राइस रुपी वन् एट् ईच। मदनलाल ने मुझसे वन् ट्वैल्व लिए। फ़ूल ! [सोचता है। उसकी दृष्टि खद्दर के गट्ठर पर पड़ती है। वह धीरे से उठता है। गट्ठर खोलता है। उसमें से एक थान निकालता है। उसे कुछ देर देखता है, फिर सोचते हुए उसे खोलकर देखता है। अपने कोट पर रख-कर सूट का अनुमान करता है। सिर हिलाकर सोचते हुए आलमारी के दराज़ में बन्द कर देता है। फिर चुपचाप आकर गठरी उसी तरह बाँध देता है। और लौटकर अख़बार पढ़ने लगता है। कभी आलमारी को देखता है, कभी खद्दर के गट्ठर को। लीला का प्रवेश।]

ली०—[नवीन को देखकर] आप तो शायद विक्टोरिया पार्क जानेवाले थे ?

न०—हाँ, ज़रा पेपर पढने लगा। [सँभलकर] अब जा रहा हूँ।

ली०—कोई ख़ास ख़बर ?

न०—टूटल टाई की क़ीमत वन् एट् है। मदनलाल ने मुझसे वन् ट्वैल्व लिए।

ली०—[मुस्करा कर] क्या यह ख़बर छपी है ?

न०—नहीं जी। टूटल टाईज़ का विज्ञापन है। उसने मुझसे चार आने ज्यादा लिए। देखी उसकी बेईमानी ?

ली०—ख़ैर, जाने भी दीजिए। समझ लीजिये, चार आने पैसे उसे दान में दे दिए। [खद्दर के गट्ठर को देख कर] यह गठरी कैसी ?

न०—एक स्वयंसेविका खद्दर बेचने आई थी। वह अपना गज़ यहीं कहीं भूल आई। लेने गई है। गट्ठर यहीं छोड़ गई है। कहती थी, रास्ते में व्यर्थ बोझ क्यों ढोऊँ ?

ली०—तो क्या कुछ ख़रीदा आपने ?

न०—नहीं तो, खद्दर मुझे कभी पसन्द नहीं आया।

ली०—आपको तो टाई पसन्द आती है ?

न०—[लज्जित होकर] लीला, मुझसे व्यङ्ग न करो। तुम्हारा उपदेश मैं बहुत सुन चुका। अच्छा अब जाता हूँ।

ली०—सुनिये, सुनिये, [नवीन का प्रस्थान] अच्छा, चले गये ? पूछती, मेरी सोने की अँगूठी कहाँ गई। [टेबुल के दराज़ में खोजती है। चन्दन को पुकार कर] चन्दन !

च०—जी हुजूर।

ली०—तुझे मालूम है, मेरी सोने की अँगूठी कहाँ है ?

च०—हुजूर, आप कल तो पहने थीं। आपने उतारकर कहीं रख दी होगी।

ली०—उतार कर रख दी, तभी तो हाथ में नहीं है।

च०—आपने बाथ रूम में तो नहीं रखी ?

ली०—[स्मरण करते हुए] शायद वहाँ हो। [प्रस्थान।]

[चन्दन अँगूठी यहाँ-वहाँ खोजता है। सुधा का स्वर बाहर से।] मैं आ सकती हूँ ?

च०—कौन है ?

सु०—अभी खद्दर बेचने आई थी।

च०—[शान से] अच्छा आओ। [सुधा का प्रवेश।]

सु०—[चन्दन को देखकर] तुम्हारे साहब कहाँ हैं। अभी नहीं आए ?

च०—अभी बाहर से नहीं आए। तुम अपना गट्ठर उठा ले जा सकती हो। और देखो जी, इसी तरह क्यों चली आती हो ? तुम अपने नाम का कार्ड रखो। जब यहाँ आओ तो पहले उसको पेश करो। समझी ? मिलने का ढङ्ग ऐसा नहीं कि आए और कमरे में घुस पड़े। साहबों से मिलने का तरीका पहले मुझसे सीखो।

सु०—ठीक है। [खद्दर का गट्ठर उठा कर चलती है।]

च०—और सुनो जी, तुम हाथ में सोने की अँगूठी नहीं पहनती ?

सुधा—सोने की अँगूठी ? पूछने का मतलब ?

च०—यही मैंने कहा, सोने की अँगूठी अच्छी होती है।

सु०—[दृढ़ दृष्टि से] अजीब आदमी है ! [प्रस्थान।]

[चन्दन फिर अँगूठी यहाँ-वहाँ खोजने लगता है। लीला का प्रवेश।]

ली०—बाथ रूम मे भी अँगूठी नहीं है। टेबुल के दराज़ में भी नहीं है। कोई यहाँ आया तो नहीं था ?

च०—वही खद्दर बेचने वाली आई थी।

ली०—वह क्या ले गई होगी ! वह नहीं ले जा सकती। फिर तुम्हारे हुजूर भी तो थे।

च०—नहीं हुज़ूर, कोई किसी का दिल क्या जाने, न जाने कब क्या···!

ली०—अभी वे नहीं आए ?

च०—नहीं तो हुज़ूर, देखूँ बाहर ? शायद आते हों। [बाहर जाता है।]

ली०—[सोचते हुए] कहाँ जा सकती है अँगूठी ? न मिलने पर वे नाराज़ ज़रूर होंगे।

[फिर टेबुल का दराज़ देखती है। न मिलने पर आलमारी का दराज़ खोलती है। खद्दर का थान देखकर विस्मित होती है। निकालती है। सोचते हुए] अच्छा, यह थान कहाँ से आया ? वे तो कहते थे कि मैंने कोई कपड़ा खरीदा ही नहीं ? फिर यह कहाँ से आया ? कहीं उसी ने तो बेचने की गरज़ से यहाँ नहीं रख दिया ··? पर वह यहाँ रख कैसे सकती है···? कहीं उन्होंने तो खद्दर के गट्ठर से निकाल कर यहाँ नहीं रख दिया ? ओह, वे कैसे होते जा रहे हैं !··· मै उसे बुलाकर वापस कर दूँ···। कहीं वे नाराज़ हो गए तो···! अच्छा यह कैसी आवाज़ ?

[बाहर चन्दन और सुधा में बातचीत होती है, लीला सुनती है।]

सु०—देखो जी, मेरे गट्ठर में एक थान कम है। कहीं अन्दर ही तो नहीं रह गया ?

च०—[रूखे स्वर से] अन्दर कैसे रह जायगा ? जैसा गट्ठर बाँध कर रख गई थीं, वैसा ही बँधा रखा था, कैसी बात करती हो तुम ?

[लीला खद्दर के थान को दराज़ में बन्द कर दरवाज़े के और पास आकर सुनने लगती है।]

सु०—गट्ठर कुछ हलका जान पड़ा। मैंने खोल कर देखा तो एक थान कम था।

च०—घर पर ही भूल आई होगी ? सुबह खूब कुहरा पड़ रहा था, जानती हो ? कुहरे-अँधेरे में कुछ दिखा न होगा। समझी होगी कि थान रख लिया। यहाँ तो गठरी किसी ने खोली भी नहीं।

सु०—[सोचकर] मुमकिन हो, मैंने ही भूल की हो। [ठहर कर] लेकिन, मैंने तो तुम्हारे हुज़ूर को वह थान दिखलाया था ?

ली०—[पुकार कर] चन्दन ?

च०—[नेपथ्य से] हुज़ूर—

ली०—क्या कोई बाहर है ?

च०—जी हाँ, वही खद्दर बेचनेवाली ! कहती है कि एक थान कम है।

ली०—हाँ, जब वे बाहर जा रहे थे तब मैंने एक थान पसन्द किया था। वह क़ीमत लिये बिना ही चली गई ?

च०—मैं बुलाऊँ ?

ली०—हाँ, बुलाओ। [सोचती है। सुधा का प्रवेश। वह हाथ जोड़ कर नमस्ते करती है। उत्तर देकर] बहन, माफ करना। तुम तो बिना जतलाये ही चली गईं। मैं भीतर थी। मैंने एक खद्दर का थान ले लिया था। क़ीमत लिये बिना ही तुम चली गईं ?

सु०—मैं समझी, गट्ठर वैसे ही बँधा हुआ रखा है। उठाकर चली गई।

ली०—मेरी अँगूठी खो गई थी, उसे ही खोजने में लगी हुई थी। इसीसे बाहर नहीं आ सकी।

सु०—इसीलिए आपका नौकर मुझसे अँगूठी पहनने को कह रहा था ! [चन्दन को तीव्र दृष्टि से देखती है।]

ली०—वह नासमझ है। आप चिन्ता न करें। अच्छा हाँ, क्या क़ीमत है आप के थान की ?

सु०—मैं वह थान ज़रा देखूँ ?

[लीला वह थान दराज़ में से निकालकर दिखलाती है। सुधा उसे देखकर—]

सु०—सात रुपये सवा नौ आने।

ली०—[पर्स में से नोट निकालते हुए] यह लीजिये, दस रुपये का नोट। बाक़ी दो रुपये पौने सात आने मुझे दे दीजिये।

सु०—[कृतज्ञता से] धन्यवाद, मेरे पास भी नोट ही है। रुपये नहीं हैं। अभी नोट भुनाकर दे देती हूँ।

[नोट लेकर जाती है। चन्दन उसे घूरता है।]

च०—हुज़ूर, इसी ने ली है आपकी अँगूठी।

ली०—चको मत, चन्दन। अच्छा देखो। [खद्दर का थान खोलते हुए] यह कैसा है चन्दन ?

च०—[उल्लास से] बहुत अच्छा है, हुजूर अगर इसका सूट बनवायें, तो जवाहरलाल से बढ़कर दिखेंगे।

ली०—[हँसकर] अच्छा, जवाहरलाल सूट पहनते हैं ?

च०—हाँ हुजूर। टैम्स में वो तसवीर निकली थी कि जवाहरलाल हवाई जहाज के पास खड़े थे सूट पहन के !

ली०—[हँसकर] पर तेरे हुजूर तो खद्दर पहनते ही नहीं।

च०—जरूर पहनेंगे, हुजूर ! अब आपने लिया है, तो वे जरूर पहनेंगे।

ली०—देखो, [अँगूठी की याद] पर चन्दन, मेरी अँगूठी नहीं मिल रही है। तेरे हुजूर सुनेंगे तो नाराज़ होंगे।

च०—[सोचते हुए) जब आप हाथ-मुँह धो रही थीं तब तो नहीं गिर गई ? हुजूर, आपको दिखी न हो। आज सुबह बड़ा कुहरा था हुजूर !

ली०—(प्रस्थान) सब चीज़ के लिए तेरा कुहरा था। अच्छा देखूँ ! [प्रस्थान।]

[चन्दन थोड़ी देर तक खड़ा सोचता है] फिर खद्दर के थान को हाथ से छूते हुए) वाह, कैसा बढ़िया है। हुजूर जब पहनेंगे तो (सोचकर) मेरे मुन्नू की माँ ने मेरे लिए कभी ऐसा कपड़ा नहीं खरीदा (नवीन का प्रवेश। चन्दन सकपका जाता है। खद्दर को टेबुल पर देखकर नवीन विस्मय मिले क्रोध से घबड़ाए हुए स्वर में)

न०—क्यो रे यह.. खद्दर का थान कहाँ से आया ? मैंने...कौन यहाँ...लाया ? उसने...मैंने कह दिया था अभी ज़रूरत नहीं, फिर और वह तो गठरी बाँध कर चली गई थी--गई थी ? फिर मैंने—

च०—[घबड़ा कर काँपते हुए] हुजूर, घर के हुजूरने—हुजूर ने...

[सुधा का प्रवेश ।]

सु०—यह लीजिये, दो रुपये पौने सात आने । देर के लिए माफ कीजिये ।

न०--[आश्चर्य से] यह—यह कैसे दो रुपये पौने सात आने !

सु०—आपने यह खद्दर का थान ख़रीदा था न ?

न०—मैंने...आँ मैंने...मैंने तो आपसे कह दिया था कि आप फिर आइये, आप फिर...

सु०—हाँ, लेकिन आपकी श्रीमती जी ने इसे ख़रीद ही लिया ।

न०--मुझसे विना पूछे ?

सु०- यह आप जाने ।

न०- अच्छा ?

सु०—आपकी श्रीमती जी ने दस रुपये का नोट दिया था ! मेरे पास बाक़ी पैसे नहीं थे । मैंने कहा अभी नोट भुनाकर लौटाती हूँ । बाक़ी पैसे लौटाने में कुछ देर हुई हो तो क्षमा करें ।

न०— खैर, क्षमा-वमा की ज़रूरत नहीं । पैसे भी उन्हीं को . ऐ...अच्छा टेबुल पर रख दीजिये ।

सु०—[टेबुल पर पैसे रखते हुए] आपको यह कपड़ा ख़ूब जँचेगा । मैं आप ही के लिए तो लाई थी । और हाँ, एक मज़ेदार

बात सुनिये। जब मै लौटकर अपना गट्ठर ले जा रही थी, तो मुझे यह गट्ठर कुछ हलका मालुम हुआ। मैंने समझा, मै एक थान आपके यहाँ ही भूली जा रही हूँ। मै इस विषय में आपके नौकर से बात ही कर रही थी कि आपकी श्रीमतीजी ने बुलाकर उस थान के लिए दस रुपये का नोट दिया।

न०—[विह्वल होकर] अच्छा, क्या उन्होंने थान पसन्द.....?

सु०—हाँ, पसन्द ही किया होगा, जब मैं अपना गज़ लाने के लिए वापस गई थी, इसी बीच मे उन्होंने खद्दर की गठरी खोल-कर शायद सब कपडे देखे थे और यही थान पसन्द किया था।

न०—[सोचता है।] हूँ।

सु०—उसी समय उन बेचारी की अँगूठी खो गई। वे भीतर अपनी अँगूठी खोज रही थीं और मै बिना उनसे मिले अपना गट्ठर लेकर बाहर चली आई। मुझे क्या पता कि मेरे सूने में ही मेरे सामान की बिक्री हो रही है। सचमुच ईश्वर बड़ा दयालु है?

न०—[सोचता है।] हूँ।

सु०—[प्रसन्नता और हर्षातिरेक से] और उनकी उदारता तो देखिये कि जब मै बाहर चली आई, तो मुझे बुलवाकर उन्होंने बिना एक पैसा कम किये मुझे सारी क़ीमत दे दी।

न०—[श्रान्त होकर] अच्छी बात है। मैं ज़रा थक गया हूँ। आराम चाहता हूँ। फिर कभी दर्शन दीजिये।

सु०—अच्छी बात है। वन्देमातरम् [प्रस्थान।]

[नवीन कुर्सी पर बेबसी से गिर पड़ता हुआ-सा बैठता है।]

च०—[विचलित होकर] हुजूर, क्या सिर में दर्द है ? बुलाऊँ उनको, हुजूर—

न०—[सँभल कर] नहीं, रहने दो। यों ही ज़रा सिर में चक्कर-सा आ गया था।

च०—[शीघ्रता से] तो हुजूर मैं बुलाता हूँ उन्हें।

[चन्दन का 'हूजूर' 'हूजूर' कहते हुए प्रस्थान।]

[नवीन सोचता है] ओह...सम्मान की इतनी अधिक रक्षा ! इस ढङ्ग से...! फेथफुल वाइफ . स्वीट लीला...और मैं !

[लीला का चन्दन के साथ प्रवेश।]

च०—[लीला से] देखिये हुजूर !

[लीला आकर एक दम से नवीन के सिर पर हाथ रखती है, वह घबड़ाई हुई है।]

लीला—[विह्वल होकर] क्यों, क्या हुआ ? क्या चक्कर आ गया ? चन्दन, ज़रा पानी लाना।

चन्दन—बहुत अच्छा, हुजूर [दौड़ते हुए प्रस्थान।]

ली०—क्यों, तबीयत आपकी कैसी है ?

न०—नहीं, यों ही कुछ भारीपन मालूम हो रहा था। तुम्हारी अँगूठी लेकर गया था नाप देने लिए। तुम्हारे लिए वैसी ही दूसरी बनवाना चाहता था। इश्योरेंस के कुछ रुपये आए थे।

ली०—[चिंतित होकर] मुझे अँगूठी की ज़रूरत नहीं है। आपको चक्कर तो नहीं आ रहा इस समय ? [चन्दन पानी लेकर आता है।] लीजिये पानी, मुँह धो डालिये।

न०—[जैसे कुछ सोचते हुए] लीला!

ली०—कहिए।

न०—लीला, मैं दुनिया बहुत बुरी समझता था, लेकिन—

ली०—[चन्दन से] चन्दन, तुम बाहर जाओ।

[चन्दन का सोचते हुए धीरे धीरे प्रस्थान।]

न०—लीला, सोशलिज़्म के विचार रखते हुए भी एक आदमी सच्चाई के साथ रह सकता है।

ली०—हाँ।

न०—वह लोगों के साथ ठीक बर्ताव रख सकता है। धनवानों से लड़ सकता है लेकिन सच्चाई के साथ, प्रेम के साथ। वह बुक-सेलर की किताबें नहीं उड़ा सकता और खद्दर का थान......

ली०—जाने दीजिए।

न०—लेकिन लीला, मेरे स्वभाव ही में ऐसी बात हो गई थी। मैं देखता हूँ कि छुटपन की पड़ी हुई आदत बड़े होने पर भी नहीं जाती!

ली०—आप सब बातें समझते हैं। आप से क्या कहना!

न०—लीला, तुम सचमुच देवी हो!

ली०—[लज्जित होकर] क्या कहते हैं आप!...अच्छा यह बतलाइए कि आपकी तबीयत अब कैसी है?

न०—[स्वस्थ होकर] नहीं अब अच्छा हूँ। यों ही कुछ......

ली०—तो कपड़े [illegible] उतार डालिये। कुछ हलकापन हो।

कलर-टाई की वजह से तो और भी बेचैनी मालूम होती होगी। इसे उतार डालिये।

न०—[आवेश में] हाँ, इसे उतार डालता हूँ। [उतार कर चन्दन को पुकारते हैं] चन्दन [चन्दन का प्रवेश।] जाओ। इस टाई को ठीक कर मदनलाल खन्ना के यहाँ दे आओ और कहो कि कल मेरे साथ यह भूल से चली आई थी।

च०—हुज़ूर, अभी आप—

ली०—[आश्चर्य से] अरे...!

न०—[दृढ़ता से] अभी आप कुछ नहीं, इसी समय लेकर जाओ!

[चन्दन रेशमी टाई लेकर सिर झुकाए जाता है।]

न०—हाँ, जरा पानी लाओ, मुँह की कालिमा धो लूँ।

[पानी के गिलास की ओर हाथ बढ़ाता है। लीला विस्मय और प्रसन्नता से नवीन की ओर देखती रह जाती है।]

[परदा गिरता है।]